ब्रह्मा भोजन हमेशा ज़्यादा ही बनाना चाहिए

ब्रह्मा भोजन हमेशा ज़्यादा ही बनाना चाहिए। बचेगा तो पीछे काम में आ जायेगा। रात का बचा तो दूसरे दिन खाने में थोड़ी दिल छोटी हो जाती है। बचे तो क्या हुआ, दूसरी बार खाना, इसमें क्या! मधुबन में देखो, हम पौने चार सौ इक्ट्ठे रहते थे। पौने चार सौ का खाना इकट्ठा बनता था। उसके लिए कितना चावल चढ़ाना पड़ता था! दाल चढ़ानी पड़ती थी तो कितनी! इतने-इतने बड़े बर्तनों में! तवे देखो कितने बड़े-बड़े! एक-एक में 10-10 रोटियाँ सेंकते थे।

हमारी एक ही भंडारी है, शुरू से एक ही चली है, भोली। मधुबन आओ, हम दिखायेंगे आपको। बहुत समय से चली आयी है और अभी तक चलती है। उसका खाना बनाना रोज़ का काम है। जैसे शादी होती है ना, शादी में इतने बड़े-बड़े बर्तनों में खाना बनाते हैं ना! हमारे पास रोज़ शादी है।

बाबा कहता है ना, मुझे इतनी सारी कन्यायें चाहिएँ। शिव बाबा से शादी करानी है ना! शिव बाबा के साथ रोज़ सगाई कराते हैं, इसलिए हमारे पास रोज़ शादी है। रोज़ आत्माओं की सगाई परमात्मा शिव बाबा से कराते हैं। उसके साथ बुद्धि बँधवाते हैं। हाथ नहीं बँधवाते, शिव बाबा को तो हाथ ही नहीं हैं ना, बुद्धि से उसके साथ सम्बन्ध बँधवाते हैं। रोज़ हम शादी करवाते हैं कि हे आत्माओ, बाप के साथ बुद्धियोग लगाओ। ऐसे हम परमात्मा के साथ आत्माओं की रोज़ शादी कराते हैं।

- मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती

f